श-ज-रए

क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : बेशक दुआ़ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो। (تِرمذی ج٢ ص٢٨ حدیث٤٨٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

بِسْمِ اللّٰہ के सात हुरूफ़ की निस्बत से श-ज-रए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या पढ़ने के 7 म-दनी फूल

1 श–ज–रए आ़लिय्या क़ादिरिय्या के अवराद वग़ैरा पढ़ने की हर उस इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को इजाज़त है जो सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र–ज़विय्या में दाख़िल है।

2 श–जरह शरीफ़ में दिये हुए तमाम अवरादो वज़ाइफ़ के हर ह़र्फ़ को उस के दुरुस्त मख़्रज के साथ अदा करना लाज़िमी है।[1]

مدینہ

1 : इस मस्अले की तफ़्सील दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब, बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 557 पर मुला–ह़ज़ा कीजिये। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ

3 अलिफ़ और ع । س और ص । ہ और ح वग़ैरा वग़ैरा में जो लाज़िमी फ़र्क़ नहीं कर सकता यहां तक कि मा'ना तब्दील हो जाते हों उसे येह अवराद पढ़ने की इजाज़त नहीं और ख़बरदार ! ग़लत़ पढ़ने की सूरत में नुक़्सान का अन्देशा है। लिहाज़ा इन अवराद वग़ैरा को किसी सह़ीह़ क़ुरआन जानने वाले सुन्नी क़ारी या सुन्नी आ़लिम को सुना दीजिये।

4 श–जरह शरीफ़ में जिन अवराद के लिये तरतीब वार पढ़ना लिखा है उन को बित्तरतीब पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ब–र–कतें ज़ियादा मिलेंगी।

5 अपने लिये इतने ही अवराद मुन्तख़ब

कीजिये जितने आप निभा सकें।

6 अवराद के तरजमे पढ़ना ज़रूरी नहीं।

7 हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़िये, हां एक निशस्त में अगर ज़ियादा अवराद पढ़ें तो इख़्तियार है कि इब्तिदाअन एक बार और तमाम अवराद ख़त्म करने के बा'द एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिन या रात में किसी भी एक वक़्त, रोज़ाना पढ़िये

1 اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ ط 70 बार।

2 لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 166 बार।

3 مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 3 बार। **4** कोई सा भी दुरूद शरीफ़ 111 बार।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पन्जगाना नमाज़ के बा'द के सात अवराद

1 بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا
لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۵۴﴾ [1]

مدينه

1 : **तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना, बड़ी ब–र–कत वाला है **अल्लाह** रब सारे जहान का। (پ۸،اعراف:۵۴)

2 گِـردِ مَـن وگِـردِ خانۂ مَن وگِردِ زَن

وفَـرزَنـدانِ مَـن وگِـردِ مال ودَوْشتانِ مَنْ

حِصارِحِفاظت تُوشَوَدَ وتُونِگَهْدار باشی۔ (1)

3 गुज़श्ता दोनों आ'माल तरतीब वार एक एक बार पढ़ने के बा'द अब तीसरा अ़मल इस नमाज़ के लिये मुक़र्रर कर्दा पन्ज गन्जे क़ादिरिय्या का विर्द पढ़िये और हर वक़्त के पन्ज गन्ज के अ़मल के बा'द अगर 72 बार يَابَاسِطُ भी पढ़ लिया करें तो

مدینہ

1 : (या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) मेरे आस पास और मेरे घर के आस पास और मेरे बच्चों और बीवी के आस पास और मेरे माल और अह़बाब के आस पास ह़िफ़ाज़त का ह़िसार हो और तू मुह़ाफ़िज़ व निगह़्बान हो।

ज़ियादा बेहतर है ।

पन्ज गन्जे क़ादिरिय्या

सब सो सो बार (अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़) के साथ पढ़िये । इसे हमेशा पढ़ने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दीन व दुन्या की बे शुमार ब-र-कतें ज़ाहिर होंगी। हर इस्म पेश (ُ) के साथ पढ़ना है।

बा'दे नमाज़े फ़ज्र : يَاعَزِيْزُ يَااَللّٰهُ

बा'दे नमाज़े ज़ोह्र : يَاكَرِيْمُ يَااَللّٰهُ

बा'दे नमाज़े अ़स्र : يَاجَبَّارُ يَااَللّٰهُ

बा'दे नमाज़े मग़रिब : يَاسَتَّارُ يَااَللّٰهُ

बा'दे नमाज़े इशा : يَاغَفَّارُ يَااَللّٰهُ

पन्ज वक़्ता नमाज़ों के सुनन व नवाफ़िल से फ़राग़त के बा'द ज़ैल के अवराद पढ़ लीजिये, सहूलत के लिये नम्बर ज़रूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त नहीं है।

4 **"आ-यतुल कुर्सी"** एक एक बार पढ़ने वाला मरते ही दाख़िले जन्नत हो।[1]

5 اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ[2] तीन तीन बार पढ़िये,

फ़ज़ीलत : पढ़ने वाले के गुनाह मुआ़फ़ हों

مدینہ

1 : شُعَبُ الْاِیمان ج ۲ ص ۴۵۸ حدیث ۲۳۹۵

2 : तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है क़ाइम रखने वाला है और उस की बारगाह में तौबा करता हूं।

अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से भागा हुवा हो।[1]

6 तस्बीहे फ़ातिमा : رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا سُبۡحٰنَ اللّٰہ 33 बार, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ 33 बार, اَللّٰہُ اَکۡبَر 33 बार येह 99 हुए, आख़िर में لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ ؕ لَہُ الۡمُلۡکُ وَلَہُ الۡحَمۡدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ؕ[2] एक बार पढ़ कर 100 का अ़दद पूरा कर ले।

फ़ज़ीलत : पढ़ने वाले के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।[3]

مدینہ

1 : مُصَنَّف عَبۡد الرَّزَّاق ج۲ص ۱۵٤ رقم ۳۲۰۱ 2 : तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है उस का कोई शरीक नहीं, उसी का मुल्क है, उसी की ह़म्द है, वोह हर चीज़ पर क़ादिर है। 3 : مسلم ص۳۰۱ حدیث ۵۹۷

7 हर नमाज़ के बा'द पेशानी के अगले हिस्से पर हाथ रख कर पढ़िये : بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ط اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ ط [1]

(पढ़ने के बा'द हाथ खींच कर पेशानी तक लाइये)

फ़ज़ीलत : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर ग़म व परेशानी से बचेंगे।[2]

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने मज़्कूरा दुआ के आख़िर में मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया है, وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّةِ [3]

مدینہ

1 : तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से मैं शुरूअ़ करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रह़मान व रह़ीम है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से ग़म व मलाल दूर फ़रमा। 2 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 23 3 : ऐज़न, स. 24

(या'नी और अहले सुन्नत से) (लिहाज़ा وَالْحُزْنَ के बा'द وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّةِ मिला लीजिये)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सुब्ह़ व शाम पढ़ने के 10 आ'माल

पहले "सुब्ह़" और "शाम" की ता'रीफ़ ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये। आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक "सुब्ह़" है। इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे सुब्ह़ में पढ़ना कहेंगे और दो पहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोह्र) से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक "शाम" है। इस पूरे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे शाम में

पढ़ना कहेंगे। हर सुब्ह और शाम ज़ैल में दिये हुए आ'माल (पढ़ने में नम्बरों की तरतीब की कोई क़ैद नहीं) पढ़ लेने के बे शुमार फ़वाइद हैं :

1 तीनों **क़ुल** [1] तीन तीन बार पढ़िये। फ़ज़ीलत : पढ़ने वाले के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर बला से महफ़ूज़ी है। सुब्ह पढ़े तो शाम तक और शाम पढ़े तो सुब्ह तक।[2]

2 اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ط [3] तीन तीन बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :**

مدینہ

1 : सू-रतुल इख़्लास, सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास 2 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 13 3 : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कामिल कलिमात के वासिते से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं।

सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़िय्यात से पनाह ह़ासिल हो।[1]

3 فَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ حِيۡنَ تُمۡسُوۡنَ وَحِيۡنَ
تُصۡبِحُوۡنَ ﴿۱۷﴾ وَلَهُ الۡحَمۡدُ فِى السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَعَشِيًّا وَّحِيۡنَ تُظۡهِرُوۡنَ ﴿۱۸﴾
يُخۡرِجُ الۡحَىَّ مِنَ الۡمَيِّتِ وَيُخۡرِجُ الۡمَيِّتَ
مِنَ الۡحَىِّ وَيُحۡىِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ
وَكَذٰلِكَ تُخۡرَجُوۡنَ ﴿۱۹﴾ ع (2) एक एक बार पढ़िये।

مدینہ

1 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 14 2 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह़ हो और उसी की ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में और कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दो पहर हो। वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता है उस के मरे पीछे, और यूंही तुम निकाले जाओगे।
(پ۲۱، الروم: ۱۷ تا ۱۹)

फ़ज़ीलत : जिस किसी दिन सब वज़ाइफ़ रह जाएं तो येह तन्हा उन सब की जगह काफ़ी है नीज़ रात दिन के हर नुक़्सान की तलाफ़ी है।[1]

4 اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ[2] तीन तीन बार, फिर **सू-रतुल हश्र** की आख़िरी तीन आयात या'नी هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ता ख़त्मे सूरह पढ़िये। एक बार,

फ़ज़ीलत : सुब्ह़ पढ़े तो शाम तक सत्तर[70] हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करें और उस दिन मरे तो शहीद हो और शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक येही फ़ज़ीलत है।[3]

مدينه

1 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 16 2 : मैं सुनने वाले, जानने वाले **अल्लाह** की पनाह मांगता हूं मरदूद शैतान से।

3 : ऐज़न, स. 17, ترمذی ج٤ص٤٢٣حديث ٢٩٣١

5 اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ ط [1]

तीन तीन बार पढ़िये। फ़ज़ीलत : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पढ़ने वाले का ख़ातिमा ईमान पर हो।[2]

6 بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَوُلْدِىْ وَاَهْلِىْ وَمَالِىْ ط [3] तीन तीन बार पढ़िये।

مدینہ

1 : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी पनाह मांगते हैं इस बात से कि किसी शै को तेरा शरीक बनाएं जान बूझ कर और हम बख़्शिश मांगते हैं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को हम नहीं जानते। 2 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 17 3 : **अल्लाह** तआ़ला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अह्ल व माल की हिफ़ाज़त हो।

फ़ज़ीलत : पढ़ने वाले के दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफ़ूज़ रहें।[1] (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

7 بِسْمِ اللّٰهِ جَلِيْلِ الشَّاْنِ عَظِيْمِ الْبُرْهَانِ شَدِيْدِ السُّلْطَانِ مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط[2] एक एक बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** पढ़ने वाला शैतान और उस के लश्करों से महफ़ूज़ रहे।[3]

مدینہ

1 : ऐज़न 2 : **अल्लाह** जलीलुश्शान, अ़ज़ीमुल बुरहान, शदीदुस्सुल्तान के नाम से इब्तिदा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है वोही होता है। मैं पनाह मांगता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शैतान मरदूद से।
3 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 18

8 اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡهَمِّ وَالۡحُزۡنِ، وَاَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡعَجۡزِ وَالۡكَسَلِ، وَاَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡجُبۡنِ وَالۡبُخۡلِ، وَاَعُوۡذُبِكَ مِنۡ غَلَبَةِ الدَّيۡنِ وَقَهۡرِ الرِّجَالِ ط [1] एक एक बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** ग़म व अलम से बचेंगे (اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) और अदाए क़र्ज़ के लिये सुब्ह व शाम ग्यारह ग्यारह बार पढ़िये।[2]

9 "**सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार**" एक एक बार या तीन तीन बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** पढ़ने वाले के

مدینہ

1 : इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं ग़म व अलम, इज्ज़ व सुस्ती, बुज़दिली व बुख़्ल, क़र्ज़े के ग़-लबे और लोगों के क़हर से तेरी पनाह मांगता हूं।
2 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 19

गुनाह मुआ़फ़ हों और उस दिन रात मरे तो शहीद। और अपने जिस फ़े'ल से नुक़्सान का अन्देशा होता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से महफ़ूज़ रखता है।

सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ، خَلَقْتَنِیْ
وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا
اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ
اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ، وَاَبُوْٓءُ لَكَ بِذَنْبِیْ

فَاغْفِرْ لِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ ط [1]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस इस्तिग़्फ़ार पर मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा किया है : [2] "وَاغْفِرْ لِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ"

(लिहाज़ा आख़िर में येह अल्फ़ाज़ भी पढ़ लीजिये)

10 لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ط

مدینہ

1 : इलाही तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तूने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़दरे ताक़त तेरे अह्दो पैमान पर क़ाइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी ने'मत का जो मुझ पर है इक़्रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं, मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।

2 : और हर मोमिन और मोमिना की बख़्शिश फ़रमा।

(अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 20, 21)

सो सो बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** दुन्या में फ़ाक़ा न हो, क़ब्र में वहूशत न हो, ह़श्र में घबराहट न हो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिर्फ़ सुब्ह़ पढ़ने के सात आ'माल

1 بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط
وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ ط

फ़ज़ीलत : हर काम बने, शैत़ान से महफ़ूज़ रहे।[2] मुन्द-र-जए बाला दुआ **"अल वज़ी-फ़तुल करीमा"** में "सुब्ह़" के आ'माल में दर्ज है मगर पढ़ने की ता'दाद नहीं लिखी

مدینہ

1 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 21 2 : ऐज़न

अलबत्ता **"मदारिजुन्नुबुव्वत"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 236 पर वक़्त की क़ैद लगाए बिग़ैर एक रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से नक़्ल की गई है कि जो कोई ऊपर दी हुई दुआ़ दस बार पढ़े वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा कि उस दिन था जब पैदा हुवा नीज़ दुन्या की सत्तर[70] बलाओं से आ़फ़िय्यत दी जाती है जैसा कि जुनून (पागल पन), जुज़ाम, बरस (या'नी कोढ़) और रीह़ वग़ैरा।

2 **सू-रतुल इख़्लास 11** बार पढ़िये । **फ़ज़ीलत :** अगर शैत़ान मअ़ अपने लश्कर कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए न करा सके जब तक कि येह ख़ुद न करे।

(अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 21)

3 يَاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ 41 बार।

फ़ज़ीलत : اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का दिल ज़िन्दा रहेगा और ईमान पर ख़ातिमा होगा। (ऐज़न)

4 سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ तीन बार।

फ़ज़ीलत : जुनून (पागल पन), जुज़ाम व बरस (कोढ़) और नाबीना होने से बचे। (ऐज़न, स. 22)

5 तिलावते कुरआने अ़ज़ीम कम अज़ कम एक पारह। ह़त्तल इम्कान तुलूए़ शम्स से पहले हो और अगर आफ़्ताब निकल आए तो कम अज़ कम बीस मिनट तक ठहर जाइये और ज़िक्रो दुरूद शरीफ़ में मश्ग़ूल रहिये यहां तक

कि आफ़्ताब बुलन्द हो जाए कि जिन तीन वक़्तों में नमाज़ ना जाइज़ है तिलावत ख़िलाफ़े औला है।

6 **दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़**, एक हि़ज़्ब।

फ़ातिह़ए सिल्सिला मदीना

7 हर रोज़ बा'द नमाज़े फ़ज्र (रिसाले के आख़िर में दिया हुवा) "मन्ज़ूम श-ज-रए आ़लिय्या" एक बार पढ़ लिया कीजिये। इस के बा'द "**दुरूदे ग़ौसिय्या**" सात बार, "**अल ह़म्द शरीफ़**" एक बार, "**आ-यतुल कुर्सी**" एक बार, "**कुल हुवल्लाह शरीफ़**" सात बार, फिर "दुरूदे ग़ौसिय्या" तीन बार पढ़ कर इस का सवाब बारगाहे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

में नज़्र कर के तमाम अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की अरवाहे त़य्यिबा की नज़्र कीजिये जिन के हाथ पर बैअ़त की है वोह ज़िन्दा हों तब भी उन का नाम शामिले फ़ातिह़ा कर लीजिये कि जीते जी[1] भी ईसाले सवाब हो सकता है और साथ ही दुआ़ए दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर भी फ़रमाइये।

مدینہ

1 : ज़िन्दा मुसल्मान के लिये भी ईसाले सवाब करना जाइज़ है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ इब्ने दिरहम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم फ़रमाते हैं : हम ह़ज करने जा रहे थे कि एक साह़िब (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ) मिले और पूछने लगे : क्या तुम से कोई क़रीब बस्ती है जिसे "उबुल्ला" कहा जाता है ? हम ने कहा : जी हां। (येह सुन कर) उन्हों ने फ़रमाया : तुम में कौन इस का ज़ामिन बनता है कि "मस्जिदे अ़श्शार" में मेरे लिये दो या चार रक्अ़तें पढ़ दे और कह दे कि येह नमाज़ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के (ईसाले सवाब) के लिये है। (ابوداؤد ج ٤ ص ١٥٣ حدیث ٤٣٠٨)

दुरूदे ग़ौसिय्या

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْکَرَمِ وَاٰلِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ ؕ

बा'दे नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र बिग़ैर पाउं बदले, बिग़ैर कलाम किये **10, 10** बार

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ ، لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ؕ (1)

---

1 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है। उस का कोई शरीक नहीं उसी का मुल्क है उसी की ह़म्द उसी के क़ब्ज़े में ख़ैर है। जिलाता और मारता है और हर चीज़ पर क़ादिर है।

फ़ज़ीलत : पढ़ने वाला हर बला व आफ़त व शैत़ान व मकरूहात से बचे। गुनाह मुआ़फ़ हों, उस के बराबर किसी की नेकियां न निकलें।[1]

(अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 25)

बा'दे नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब

1 [2] اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ط सात सात बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** पढ़ने वाला उस दिन या रात में मरे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से महफ़ूज़ रखेगा।[3]

मदीना

1 : मुस्नदे अह़मद की रिवायत में नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब के बा'द पढ़ने का ज़िक्र आया है दूसरी रिवायत में फ़ज्र व अ़स्र आया है और ह़-नफ़िय्या के मज़्हब से ज़ियादा मुनासिब येही है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 541) 2 : इलाही मुझे जहन्नम से बचा। 3 : ابوداؤد ج٤ص٤١٥ حديث ٥٠٧٩

2 रोज़ाना बा'दे नमाज़े फ़ज्र सूरज तुलूअ़ होने से पहले और बा'दे नमाज़े मग़रिब मुन्द-र-जए ज़ैल चारों दुआ़एं दस दस बार पाबन्दी से पढ़ने वाले के तमाम जाइज़ काम बनेंगे और दुश्मन भी मग़्लूब होगा। (اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

- حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۲۹﴾ ع (1)
- اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۸۳﴾ ج (2)
- اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿۱۰﴾ (3)

مدینه

1 : तरजमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है। (پ ۱۱،التوبہ:۱۲۹) **2 :** के मुझे तक्लीफ़ पहुंची और तू सब मेह्र वालों से बढ़ कर मेह्र वाला है। (پ۱۷،الانبیاء:۸۳) **3 :** के मैं मग़्लूब हूं तू मेरा बदला ले। (پ۲۷،القمر:۱۰)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿۴۵﴾ (1)

बा'दे नमाज़े फ़ज्र ह़ज व उ़मरे का सवाब

बा'दे नमाज़े फ़ज्र बिग़ैर पाउं बदले बैठा हुवा ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो या'नी तुलूए़ कनारए शम्स को कम अज़ कम बीस मिनट गुज़र जाएं उस वक़्त दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े पूरे ह़ज व उ़म्रह का सवाब ले कर पलटे। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 26, ترمذی ج۲ص ۱۰۰ حدیث۵۸۶)

ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "अपने मुसल्ले में बैठा रहे" की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** अब भगाई जाती है येह जमाअ़त और पीठें फैर देंगे। (پ27،القمر:45)

सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिद या घर में इस ह़ाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इल्मे दीन सीखने सिखाने या बैतुल्लाह के त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहे नीज़ सिर्फ़ ख़ैर ही बोले के बारे में फ़रमाते हैं : या'नी फ़ज्र और इश्राक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्त-गू न करे क्यूं कि येह वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब होता है।

(مِرْقاۃ ج ۳ ص ٤٩٦ تَحْتَ الْحَدِیث ١٣١٧)

रात के वक़्त के चार आ'माल

गुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्हे सादिक़ तक रात कहलाती है, इस वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ेंगे

उसे "रात" में पढ़ना कहा जाएगा। म-सलन नमाज़े मग़रिब के बा'द भी अगर कोई विर्द पढ़ा जाए तो उसे रात में पढ़ना कहेंगे। रात में हो सके तो येह पढ़ लीजिये :

1. **सू-रतुल मुल्क :** अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात है।[1]
2. **सू-रए यासीन :** मग़्फ़िरत है।[2]
3. **सू-रतुल वाक़िअ़ह :** फ़ाक़े से अमान है।[3]
4. **सू-रतुद्दुख़ान :** सुब्ह इस ह़ाल में उठे कि सत्तर[70] हज़ार फ़िरिश्ते इस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते हों।[4]

مدینہ

١: اَلسّنَنُ الکُبریٰ لِلنَّسائی ج٦ص١٧٩حدیث١٠٥٤٧
٢: شُعَبُ الاِیمان ج٢ص٤٨٠حدیث٢٤٦٢
٣: ایضاً ص٤٩١حدیث٢٤٩٧ ٤: تِرمذی ج٤ص٤٠٦حدیث٢٨٩٧

सोते वक़्त के सात आ'माल

1 **आ-यतुल कुर्सी** एक बार पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सुब्ह़ तक एक निगह्बान (फ़िरिश्ता) मुक़र्रर हो और शैत़ान क़रीब न आए। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस के घर और गिर्द के घरों में चोरी से पनाह हो। आसेब व जिन्न का दख़्ल न हो।[1]

2 **तस्बीह़े फ़ात़िमा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पढ़िये। **फ़ज़ीलत :** सुब्ह़ ख़ुश ख़ुश उठे और दीगर बे शुमार फ़वाइद।[2]

3 **अल ह़म्द** शरीफ़ और **कुल हुवल्लाह**

1 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 30 2 : ऐज़न

शरीफ़ एक एक बार ।[1]

4 इब्तिदाए **सू-रतुल ब-क़रह** से مُفْلِحُوْن तक और फिर اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरह तक।[2]

5 **सू-रतुल कह्फ़** की आख़िरी चार आयतें या'नी " اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا " से ख़त्मे सूरह तक । **फ़ज़ीलत :** रात में या सुब्ह जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़ें आंख खुलेगी।[3] (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

مدینہ

1 : اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج ۱ص ۲۳۵ حدیث ۱۰

2 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 31

3 : अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 33, دارمی ج ۲ص ۵۴۶ حدیث ۳۴۰۶

सू-रतुल कहफ़ की आख़िरी चार आयात

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ
لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا
لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ
مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ
تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ
اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ
رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ
بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

6 दोनों हाथों की हथेलियां फैला कर तीनों **कुल** शरीफ़ एक एक बार पढ़ कर उन पर दम कर के सर और चेहरा और सीने और आगे पीछे जहां तक हाथ पहुंचें सारे बदन पर फैरिये। फिर दोबारा, सेहबारा (या'नी तीसरी बार) इसी त़रह़ कीजिये। **फ़ज़ीलत :** (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) हर बला से महफ़ूज़ रहेंगे। (अल वज़ी–फ़तुल करीमा, स. 33)

7 सूरए قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पर ख़ातिमा करे। इस के बा'द कलाम की ह़ाजत हो तो बात कर के फिर येही सूरत पढ़ ले कि इसी पर ख़ातिमा होगा। (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) (ऐज़न, स. 34)

बेदार होने पर पढ़िये

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا

(1) وَاِلَیْہِ النُّشُوْر **फ़ज़ीलत :** पढ़ने वाला क़ियामत में भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हुवा उठे।(2)

तहज्जुद नमाज़े इशा पढ़ने के बा'द कुछ देर सो रहे फिर रात में सुब्ह़े सादिक़ से पहले जिस वक़्त आंख खुले अगर्चे नमाज़े इशा पढ़ने के बा'द थोड़ी देर सो जाने के बा'द आंख खुल जाए। तो वुज़ू कर के कम अज़ कम दो रक्अ़त तहज्जुद पढ़ लीजिये। सुन्नत आठ रक्अ़त हैं और मा'मूले मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام बारह रक्अ़त। क़िराअत का

1 : तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़ता फ़रमाई और हमें उस की त़रफ़ लौटना है। (بخاری ج٤ ص١٩٢ حدیث ٦٣١٢)

2 : अल वज़ी–फ़तुल करीमा, स. 34

इख़्तियार है जो चाहे पढ़िये, बेहतर येह है कि जितना क़ुरआने करीम याद हो उस की तिलावत नमाज़े तहज्जुद की रक्अ़तों में कीजिये। अगर पूरा क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ है तो कम से कम तीन रात और ज़ियादा से ज़ियादा चालीस रात में ख़त्म की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। अगर चाहें तो हर रक्अ़त में तीन तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ लीजिये कि जितनी रक्अ़तें पढ़ेंगे उतने ख़त्मे क़ुरआने करीम का सवाबे अ़ज़ीम मिलेगा। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब, **म-दनी पन्जसूरह** में शामिल फ़ैज़ाने नवाफ़िल का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

काम अटक गए हों तो....

जाइज़ ह़ाजात व काम्याबी और दुश्मनों की मग़्लूबी के लिये मुन्द-र-जए ज़ैल वज़ाइफ़ पढ़िये :

1 (1) اَللّٰہُ رَبِّیْ لَا شَرِیْکَ لَہٗ ط आठ सो चौहत्तर (874) बार, अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़। मुराद के ह़ासिल होने तक रोज़ाना पढ़िये, वक़्त की कोई क़ैद नहीं। बा वुज़ू क़िब्ला रू दो ज़ानू बैठ कर पढ़िये और इसी कलिमे को उठते बैठते, चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू हर ह़ाल में बे गिनती व बे शुमार ज़बान पर

1 : तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा रब है उस का कोई शरीक नहीं।

जारी रखिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुराद पूरी होगी।

2 حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾ (1)

साढ़े चार सो (450) बार अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़, ता हुसूले मुराद रोज़ाना पढ़िये। (इस में भी वक़्त की कोई क़ैद नहीं) मुराद पूरी होने के लिये बेहतरीन अ़मल है। नीज़ जिस वक़्त घबराहट हो तो इस कलिमे की कसरत घबराहट से छुटकारे का बाइस होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

3 बा'दे नमाज़े इ़शा एक सो ग्यारह मर्तबा

مدینہ

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम को बस है और क्या अच्छा कारसाज़। (پ٤، اٰل عمرٰن:١٧٣)

“तुफ़ैले ह़ज़रते दस्त गीर दुश्मन होवे ज़ेर”[1]

पढ़िये (अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह बार दुरूद शरीफ़) । येह तीनों अ़मल जो लिखे गए हैं निहायत मुजर्रब (या'नी मुअस्सिर) होने के साथ साथ आसान भी हैं, इन से ग़फ़्लत न की जाए। जब भी कोई ह़ाजत पेश आए तो इन तीनों अ़–मलों में से हर एक उसी ता'दाद के मुत़ाबिक़ पढ़िये जो लिखी गई है, ता'दाद में क़स्दन (या'नी इरादतन) कमी या ज़ियादती मत कीजिये कि चाबी के दनदाने कम या ज़ियादा होने की सूरत में ताला नहीं खुलता। अगर कोई मख़्सूस ह़ाजत दरपेश न हो तो पहला और दूसरा अ़मल सो सो बार रोज़ाना पढ़िये। (अव्वल व आख़िर

1 : तरजमा : ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तुफ़ैल दुश्मन मग़्लूब हो।

तीन तीन बार दुरूद शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मदीना 1 ख़त्मे कुरआन

औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का इर्शाद है : बिला शुबा तिलावते कुरआन ह़ाजतें बर आने के लिये मुजर्रब है। जितना भी हो सके रोज़ाना अदब के साथ पढ़ते रहिये। अगर ज़ैल में दिये हुए त़रीक़े पर पढ़े तो बहुत अच्छा है कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द ही काम्याबी होगी। जुमुआ़ के दिन से शुरूअ़ करे और जुमा'रात को कुरआन ख़त्म। तिलावत की तरतीब येह हो :

बरोज़े जुमुआ़	सू-रतुल फ़ातिह़ा	ता	सू-रतुल माइदह
बरोज़े हफ़्ता	सू-रतुल अन्आ़म	ता	सू-रतुत्तौबह
बरोज़े इतवार	सू-रतु यूनुस	ता	सू-रतु मरयम
बरोज़े पीर	सू-रतु طٰهٰ	ता	सू-रतुल क़सस
बरोज़े मंगल	सू-रतुल अ़न्कबूत	ता	सू-रतु صٓ
बरोज़े बुध	सू-रतुज़्ज़ुमर	ता	सू-रतुर्रह़मान
बरोज़े जुमा'रात	सू-रतुल वाक़िअ़ह	ता	सू-रतुन्नास

ख़ल्वत व तन्हाई में पढ़िये, दरमियाने तिलावत बात न कीजिये। हर मुहिम व जाइज़ काम के हुसूल के लिये लगातार बारह मर्तबा ख़त्म शरीफ़ को इक्सीरे आ'ज़म यक़ीन कीजिये।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दुरूदे र-ज़विय्या (1)

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ، صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط

ऊपर दिये हुए दुरूदो सलाम को बा'द नमाज़े जुमुआ़ मज्मअ़ के साथ मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ मुंह कर के दस्त बस्ता खड़े हो कर सो बार पढ़िये। जहां जुमुआ़ न होता हो, जुमुआ़ के दिन नमाज़े सुब्ह़ ख़्वाह ज़ोह्र या अ़स्र के बा'द पढ़िये जो कहीं अकेला हो तन्हा पढ़े। यूंही इस्लामी बहनें अपने अपने घरों में

مدینہ

1 : आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस में तीन दुरूद शरीफ़ यक्जा फ़रमाए हैं लिहाज़ा आप की निस्बत से इस का नाम "दुरूदे र-ज़विय्या" है।

पढ़ें। (पाक व हिन्द में सीधे हाथ की त़रफ़ मुड़ कर खड़े होने की ज़रूरत नहीं, क़िब्ला रू खड़े रहने से भी मदीनए मुनव्वरह زَادَهَااللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ रुख़ हो जाता है)

"मुस्त़फ़ा पर करोड़ों सलाम" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से दुरूदो सलाम के 17 म-दनी फूल

जो मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत रखेंगे, जो उन की अ-ज़मत तमाम जहान से ज़ियादा दिल में रखेंगे, जो उन की शाने पाक घटाने और उन का ज़िक्रे पाक मिटाने की कोशिश करने वालों से दूर व नुफ़ूर रहेंगे। ऐसों से दिल से बेज़ार रहेंगे, उन

आ़शिक़ाने रसूल में से जो कोई भी दुरूदो सलाम पढ़ेगा उस के लिये बे शुमार फ़ाएदे हैं, इस ज़िम्न में 17 म-दनी फूल पेश किये जाते हैं :

इस के पढ़ने वाले पर अल्लाह तआ़ला तीन हज़ार रह़मतें उतारेगा। उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजेगा। पांच हज़ार नेकियां उस के नामए आ'माल में लिखेगा। उस के पांच हज़ार गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा। उस के पांच हज़ार द-रजे बुलन्द फ़रमाएगा। उस की पेशानी पर लिख देगा कि येह मुनाफ़िक़ नहीं। उस के माथे (या'नी पेशानी) पर तह़रीर फ़रमाएगा कि येह दोज़ख़ से आज़ाद है। अल्लाह उसे क़ियामत के दिन

शहीदों के साथ रखेगा। उस के माल में तरक़्क़ी देगा। उस की औलाद और औलाद की औलाद में ब-र-कत देगा। दुश्मनों पर ग़-लबा देगा। दिलों में उस की महब्बत रखेगा। किसी दिन ख़्वाब में ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत इनायत फ़रमाएगा। ईमान पर ख़ातिमा होगा। क़ियामत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस से मुसा-फ़हा फ़रमाएंगे। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त उस के लिये वाजिब होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से

ऐसा राज़ी होगा कि कभी नाराज़ न होगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत के 6 अहम म-दनी फूल

1 हर आ़क़िल व बालिग़ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन पर रोज़ाना पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। इस्लामी भाइयों को मस्जिद व जमाअ़त का इल्तिज़ाम भी वाजिब है। बे नमाज़ गोया तस्वीर नुमा इन्सान है कि ज़ाहिरी सूरत तो इन्सान की मगर इन्सान का सा काम कुछ नहीं। बे नमाज़ वोही नहीं जो कभी नमाज़ न पढ़े

مدینہ

1 : मुलख़्ख़स अज़ ह़याते आ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 713, 714

बल्कि जो एक वक़्त की नमाज़ भी क़स्दन छोड़े वोह बे नमाज़ है । किसी की नोकरी, मुला-ज़मत ख़्वाह तिजारत वग़ैरा किसी ह़ाजत के सबब नमाज़ क़ज़ा कर देनी सख़्त ना शुक्री, परले द-रजे की नादानी और गुनाहे कबीरा है। कोई आक़ा यहां तक कि काफ़िर का भी अगर नोकर हो तो वोह अपने मुलाज़िम को नमाज़ से नहीं रोक सकता और अगर नमाज़ न पढ़ने दे तो ऐसी नोकरी ही क़त्अ़न ह़राम है । नीज़ ऐसी नोकरी भी ना जाइज़ है जिस में बिला उ़ज़्रे शर-ई फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअ़त तर्क करनी पड़े । याद रहे कि कोई वसीलए रिज़्क़ नमाज़ खो कर ब-र-कत नहीं ला सकता, रिज़्क़ तो उसी के

दस्ते क़ुदरत में है जिस ने नमाज़ फ़र्ज़ की और इस के तर्क पर सख़्त ग़ज़ब फ़रमाता है। وَالْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی (या'नी और हम अल्लाह तआ़ला की पनाह पकड़ते हैं)

2 अगर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप पर क़ज़ा नमाज़ें बाक़ी हैं तो सब का ऐसा हिसाब लगाइये कि अन्दाज़े में बाक़ी न रह जाएं ज़ियादा हो जाएं तो ह़रज नहीं और वोह सब नमाज़ें ब क़दरे त़ाक़त रफ़्ता रफ़्ता जल्द ही अदा कर लीजिये, काहिली (सुस्ती) मत कीजिये कि मौत का वक़्त मा'लूम नहीं। याद रखिये ! जब तक फ़र्ज़ नमाज़ें ज़िम्मे पर बाक़ी रहती हैं कोई नफ़्ल नमाज़ क़बूल नहीं की जाती। क़ज़ा नमाज़ें जब मु-तअ़द्दद हों

म-सलन सो बार की नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा है तो हर बार यूं निय्यत कीजिये कि सब में पहली वोह फ़ज्र जो मुझ से क़ज़ा हुई। इसी त़रह़ ज़ोह्र वग़ैरा हर नमाज़ में निय्यत कीजिये। क़ज़ा में पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़ रक्अ़तें और वित्र मिला कर हर दिन और रात की बीस रक्अ़तें अदा की जाती हैं। इस के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ रिसाला, **"क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा"** पढ़ लीजिये।

3 जितने भी रोज़े क़ज़ा हुए हों वोह दूसरे माहे र-मज़ान शरीफ़ की तशरीफ़ आ-वरी से पहले पहले अदा कर लिये जाएं कि ह़दीस शरीफ़ में है : जब तक पिछले र-मज़ान के रोज़ों

की क़ज़ा न कर ली जाए अगले क़बूल नहीं होते।[1]

4 अगर आप साहिबे माल हैं या'नी आप की मिल्किय्यत में निसाब की क़दर माल हो और ज़कात की शराइत पाई जाएं[2] तो ज़कात भी अदा कीजिये। अगर पिछले बरसों की ज़कात बाक़ी हो तो फ़ौरन हिसाब कर के वोह भी अदा कर दीजिये। याद रखिये! साल मुकम्मल होने के बा'द बिला उज़्रे शर-ई देर लगाना गुनाह है। शुरूए साल से रफ़्ता रफ़्ता ज़कात देते रहिये फिर साल मुकम्मल होने पर हिसाब कर लीजिये

مدینہ

1 : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "फ़ैज़ाने सुन्नत" के बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान का मुता-लआ फ़रमाइये।

2 : तफ़्सीलात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ किताब "फ़ैज़ाने ज़कात" मुला-हज़ा फ़रमाइये।

अगर पूरी ज़कात अदा हो गई तो बेहतर वरना जितनी भी बाक़ी हो फ़ौरन अदा फ़रमा दीजिये और अगर कुछ ज़ियादा ज़कात निकल गई है तो वोह आयिन्दा साल में काट लीजिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी का नेक अमल ज़ाएअ नहीं करता।

5 साहिबे इस्तिताअत पर हज भी फ़र्ज़े आ'ज़म है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस की फ़र्ज़ियत के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

وَ لِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۷﴾ (1)

مدینہ

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके और जो मुन्किर हो तो **अल्लाह** सारे जहान से बे परवाह है। (پ ٤، اٰلِ عمرٰن:٩٧)

ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तारिके ह़ज के बारे में फ़रमाया कि चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर।

(ترمذی ج۲ ص ۲۱۹ حدیث ۸۱۲)

6 झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच, ज़िना, लिवात़त, ज़ुल्म, ख़ियानत, रिया, तकब्बुर, दाढ़ी मुंडवाना या कतरवा कर एक मुठ्ठी से घटाना, फ़ासिक़ों की वज़्अ़ अपनाना, फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुनना वग़ैरा, हर बुरी ख़स्लत से बचिये । जो **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करेगा, **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वा'दे से उस के लिये जन्नत है।

अल्लाह की रह़मत से तो जन्नत ही मिलेगी
ऐ काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

याद दिहानी के रंग बिरंगे मदनी फूल

یاد داری کہ وقتِ زادَن تُو
ہَمہ خنداں بَدَنْد و تو گریاں
آں چُناں زی کہ وقتِ مُردن تُو
ہَمہ گریاں شَوَند و تُو خنداں

या'नी याद रख ! तेरी पैदाइश के वक़्त सब ख़न्दां थे (या'नी हंस रहे थे) मगर तू गिर्यां (या'नी रो रहा था) ऐसा जीना जी कि तेरी मौत के वक़्त सब गिर्यां हों और तू ख़न्दां।

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन !

इख़्लास से अगर आप यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में तज़र्रोअ़ व ज़ारी करते रहे, हिज्रो फ़िराक़े महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में दिल तपां सीना बिर्यां और गिर्यां कनां रहे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वक़्ते इन्तिक़ाल विसाले महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पा कर आप शादां व फ़रहां और आप के फ़िराक़ पर मख़्लूक़ नालां व गिर्यां होगी।

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन ! अपने वोह तमाम अ़ह्द याद रखिये जो कि आप ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से इस नाचीज़ व गुनहगार बन्दे के हाथ पर किये हैं ह़क़ तआ़ला से अपने ह़क़ में दुआ़ भी करते रहिये कि जैसी चाहिये वैसी

पाबन्दिये अह़कामे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में जियूं और ता दमे वापसीं सुन्नतों की पाबन्दी करता रहूं।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन! आप ने अ़ह्द किया है कि मज़्हबे मुहज़्ज़ब अहले सुन्नत पर क़ाइम रहेंगे और हर बद मज़्हब की सोह़बत से बचते रहेंगे, इस पर सख़्ती से क़ाइम रहिये।

فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ (1)

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन! याद रखिये! आप ने अ़ह्द किया है कि नमाज़ रोज़े और हर फ़र्ज़ को शरीअ़ते मुत़ह्हरा के मुत़ाबिक़

مدینہ

1 : **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो न मरना मगर मुसल्मान। (پ ۲، البقرہ:۱۳۲)

अदा करते रहेंगे और गुनाहों से बचते रहेंगे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करे आप अपने अ़ह्द पर क़ाइम रहें। याद रखिये ! अ़ह्द तोड़ना ह़राम है और सख़्त ऐ़ब और निहायत बुरा काम है। ईफ़ाए अ़ह्द लाज़िम है अगर्चे किसी अदना से अदना मख़्लूक़ से किया हो। येह अ़ह्द तो आप ने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ से किये हैं।

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन ! मौत को याद रखिये, अगर मौत को याद रखेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हलाकत के मक़ाम से छुटकारा मिलेगा, दीनो ईमान सलामत रहेंगे और इत्तिबाए़ सुन्नत की सआ़दत भी नसीब होगी और गुनाहों से तह़फ़्फ़ुज़ भी ह़ासिल होगा।

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन ! आज जाग लीजिये ताकि मौत के बा'द सुख चैन, इत्मीनान व आराम की नींद सोना मिले। फ़िरिश्ते क़ब्र में आप से कहें : "نَمْ كَنَوْمَةِ الْعَرُوْسِ" (या'नी दुल्हन की त़रह़ सो जा)

जागना है जाग ले अफ़्लाक के साए तले
ह़श्र तक सोता रहेगा ख़ाक के साए तले

ऐ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन ! दुन्या पर मत फ़रेफ़्ता हों। दुन्या पर ह़द से ज़ियादा शैदा होना ही ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल होना है।

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार
तू अचानक मौत का होगा शिकार

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनें तवज्जोह फ़रमाएं

इस्लामी बहनो ! अपने मख़्सूस अय्याम से मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूमात आप के लिये लाज़िमी है, इस सिल्सिले में **"बहारे शरीअ़त"** का दूसरा हिस्सा ज़रूर पढ़ लीजिये या किसी इस्लामी बहन से पढ़वा कर सुन लीजिये । नीज़ पर्दे से मु-तअ़ल्लिक़ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ किताब, **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** का मुता-लआ़ कर लीजिये । पर्दे के मु-तअ़ल्लिक़ एक रिवायत मुला-हज़ा हो चुनान्चे हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं और हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا हम दोनों सरकारे

मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर थीं कि (नाबीना सह़ाबी) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम दोनों से फ़रमाया : "पर्दा कर लो।" मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह तो नाबीना हैं, हमें नहीं देखेंगे। इस पर मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम दोनों भी नाबीना हो ? तुम उन्हें नहीं देख पाओगी ?" (تِرمذی ج ٤ ص٣٥٦ حدیث٢٧٨٧)

इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ मर्द के लिये येह लाज़िमी है कि ग़ैर औ़रत को न देखे इसी त़रह़ औ़रत भी ग़ैर मर्द को देखने से बचे। अलबत्ता मर्द के ग़ैर औ़रत को देखने

और औ़रत के ग़ैर मर्द को देखने में थोड़ा सा फ़र्क़ है चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब, **बहारे शरीअ़त जिल्द 3** सफ़ह़ा 443 पर मस्अला नम्बर 6 है : औ़रत का मर्दे अज्नबी की त़रफ़ नज़र करने का वोही हुक्म है, जो मर्द का मर्द की त़रफ़ नज़र करने का है और येह उस वक़्त है कि औ़रत को यक़ीन के साथ मा'लूम हो कि उस की त़रफ़ नज़र करने से शह्वत नहीं पैदा होगी और अगर इस का शुबा भी हो तो हरगिज़ नज़र न करे। (عالمگیری ج ۵ ص ۳۲۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों के लिये 4 मदनी फूल

1 इस्लामी बहन ग़ैर मर्द के जिस्म को हरगिज़ न छूए, उस से हाथ न मिलाए, ह़त्ता कि अपने ना महरम पीर का हाथ भी न चूमे और अपने सर पर हाथ भी न फिरवाए।

2 इस्लामी बहन अपने सर के बाल जो कंघी वग़ैरा करने में निकले हैं वोह किसी ऐसी जगह न डाले जहां ग़ैर मर्द की नज़र पड़े।

3 चचाज़ाद, तायाज़ाद, ख़ालाज़ाद, फूफीज़ाद, मामूंज़ाद में भी पर्दे का हुक्म है और देवर भाभी के दरमियान बे पर्दगी तो मौत की त़रह़ बाइसे हलाकत है। नीज़ बहनोई, ख़ालू,

फूफा और जेठ से भी पर्दा है।

4 इस्लामी बहनें अपने घर के बाहर न चबूतरों पर बैठें न खिड़कियों वग़ैरा से झांकें कि इस त़रह़ भी फ़ितने का दरवाज़ा खुलता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी

प्यारे इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो! आप को चाहिये कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के साथ तन मन और धन के साथ हर मुम्किन तआ़वुन करें, जहां जहां इस के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ होते हैं हर मुम्किन सूरत में उस में

शिर्कत फ़रमाएं। इसी त़रह़ जहां जहां फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स होता है वहां भी शरीक हों। जहां दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत का सिल्सिला नहीं है वहां दर्स जारी करवाएं। तमाम इस्लामी भाई हर माह कम अज़ कम तीन दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करें।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! हम सब को मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी, अपना पसन्दीदा बन्दा, आ़शिक़े रसूल और आ़शिक़े मदीना बना और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

उन दो का सदक़ा जिन को कहा, मेरे फूल हैं
कीजे रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तवारीख़े आ'रास व मदफ़न शरीफ़

नं.	अस्माए गिरामी	रिह़लत	मज़ारे अक़्दस
1	शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	12 रबीउ़ल अव्वल 11 हि.	मदीनए मुनव्वरह
2	ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	21 र-मज़ानुल मुबारक 40 हि.	नजफ़ शरीफ़
3	ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	जुमुआ़ 10 मुह़र्रमुल ह़राम 61 हि.	करबलाए मुअ़ल्ला
4	ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	14 रबीउ़ल अव्वल 94 हि.	मदीनए त़य्यिबा
5	ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	7 ज़िल ह़िज्जा 114 हि.	//
6	ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	15 रजब 148 हि.	//
7	ह़ज़रते इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	5 रजब 183 हि.	बग़दाद शरीफ़
8	ह़ज़रते इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	21 र-मज़ानुल मुबारक 203 हि.	मश्हदे मुक़द्दस
9	ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	2 मुह़र्रमुल ह़राम 200 हि.	बग़दाद शरीफ़
10	ह़ज़रते इमाम सरी सक़त़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	6 र-मज़ानुल मुबारक 253 हि.	//
11	ह़ज़रते इमाम जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	27 रजब 298 हि.	//
12	ह़ज़रते इमाम शिब्ली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه	27 ज़िल ह़िज्जा 334 हि.	//

13	ह़ज़रते इमाम शैख़ अ़ब्दुल वाह़िद رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	26 जुमादल आख़िर 410 हि.	बग़दाद शरीफ़
14	ह़ज़रते इमाम अबुल फ़रह़ त़रतूसी رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	3 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 447 हि.	//
15	ह़ज़रते इमाम अबुल ह़सन हक्कारी رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	यकुम मुह़र्रमुल ह़राम 486 हि.	//
16	ह़ज़रते इमाम अबू सईद मख़्ज़ूमी رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	12 मुह़र्रमुल ह़राम 513 हि.	//
17	ह़ज़रते ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	11 रबीउ़ल आख़िर 561 हि.	//
18	ह़ज़रते सय्यिद अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	6 शव्वालुल मुकर्रम 623 हि.	//
19	ह़ज़रते सय्यिद अबू सालेह़ नस्र رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	27 र-जबुल मुरज्जब 632 हि.	//
20	ह़ज़रते सय्यिद मुह़्युद्दीन अबू नस्र رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	27 रबीउ़ल अव्वल 656 हि.	//
21	ह़ज़रते सय्यिद अ़ली बग़दादी رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	23 शव्वालुल मुकर्रम 739 हि.	//
22	ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	13 र-जबुल मुरज्जब 763 हि.	//
23	ह़ज़रते सय्यिद ह़सन رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	26 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 781 हि.	//
24	ह़ज़रते सय्यिद अह़मद जीलानी رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	19 मुह़र्रमुल ह़राम 853 हि.	//
25	ह़ज़रते शैख़ बहाउद्दीन رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ	11 ज़िल ह़िज्जा 921 हि.	दौलतआबाद
26	ह़ज़रते इब्राहीम ईरची رَحْمَةُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہ	15 रबीउ़ल आख़िर 953 हि.	देहली

27	ह़ज़रत मुह़म्मद निज़ामुद्दीन भिकारी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	9 ज़ी क़ा'दह 981 हि.	काकोरी शरीफ़
28	ह़ज़रत क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन मा'रूफ़ जिया رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	21 र-जबुल मुरज्जब 989 हि.	लखनउ
29	ह़ज़रत जमालुल औलिया رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	शबे ईदुल फ़ित्र 1047 हि.	कोड़ा जहांआबाद
30	ह़ज़रते सय्यिद मुह़म्मद कालपवी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	6 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1071हि.	कालपी शरीफ़
31	ह़ज़रते सय्यिद अह़मद कालपवी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	19 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1084 हि.	//
32	ह़ज़रते सय्यिद फ़ज़्लुल्लाह رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	14 ज़ी क़ा'दह 1111 हि.	//
33	ह़ज़रते सय्यिद ब-रकतुल्लाह رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	10 मुह़र्रमुल ह़राम 1142 हि.	मारह़रा मुत़ह्हरा
34	ह़ज़रते सय्यिद आले मुह़म्मद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	16 र-मज़ानुल मुबारक 1164 हि.	//
35	ह़ज़रते शाह ह़म्ज़ा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	14 मुह़र्रमुल ह़राम 1198 हि.	//
36	ह़ज़रते सय्यिद शाह आले अह़मद अच्छे मियां رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	17 रबीउ़ल अव्वल 1225 हि.	//
37	ह़ज़रते सय्यिद शाह आले रसूल رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	18 ज़िल ह़िज्जा 1296 हि.	//
38	इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	25 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1340 हि.	बरेली शरीफ़
39	शैख़ ज़ियाउद्दीन म-दनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ	4 ज़िल ह़िज्जा 1401 हि.	मदीनए त़य्यिबा
40	ह़ज़रत मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ		

फ़ेहरिस

मज़्मून	सफ़हा	मज़्मून	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	सू-रतुल कह्फ़ की आख़िरी चार आयात	33
श-ज-रए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या पढ़ने के 7 म-दनी फूल	2	बेदार होने पर पढ़िये	34
दिन या रात में किसी भी एक वक़्त रोज़ाना पढ़िये	4	तहज्जुद	35
पन्जगाना नमाज़ के बा'द के सात अवराद	5	काम अटक गए हों तो......	37
पन्ज गन्जे क़ादिरिय्या	7	ख़त्मे क़ुरआन	40
सुब्ह़ व शाम पढ़ने के 10 आ'माल	11	दुरूदे र-ज़विय्या	42
सय्यिदुल इस्तिग़्फ़ार	18	दुरूदो सलाम के 17 म-दनी फूल	43
सिर्फ़ सुब्ह़ पढ़ने के सात आ'माल	20	नेकी की दा'वत के 6 अहम म-दनी फूल	46
फ़ातिह़ए सिल्सिला	23	याद दिहानी के रंग बिरंगे म-दनी फूल	53
दुरूदे ग़ौसिय्या	25	इस्लामी बहनें तवज्जोह फ़रमाएं	58
बा'दे नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र	25	इस्लामी बहनों के लिये 4 म-दनी फूल	61
बा'दे नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब	26	दा'वते इस्लामी	62
बा'दे नमाज़े फ़ज्र ह़ज व उ़म्रे का सवाब	28	तवारीख़े आ'रास व मदफ़न शरीफ़	64
रात के वक़्त के चार आ'माल	29	श-ज-रए आ़लिय्या (मन्ज़ूम)	68
सोते वक़्त के 7 आ'माल	31	मआख़िज़ो मराजेअ़	73

श-जर-रए आलिय्या

हज़राते मशाइख़े किराम सिल्सिलए मुबा-रका क़ादिरिय्या र-ज़विय्या ज़ियाइय्या

या इलाही रह़्म फ़रमा मुस्त़फ़ा[1] के वासित़े
या रसूलल्लाह करम कीजे ख़ुदा के वासित़े

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा[2] के वासित़े
कर बलाएं रद शहीदे करबला[3] के वासित़े

सय्यिदे सज्जाद[4] के सदक़े में साजिद रख मुझे
इल्मे ह़क़ दे बाक़िरे[5] इल्मे हुदा के वासित़े

सिद्क़े सादिक़[6] का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम[7] और रज़ा[8] के वासित़े

बहरे मा'रूफ़ो[9] सरी[10] मा'रूफ़ दे बे ख़ुद सरी
जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे[11] बा सफ़ा के वासिते

बहरे शिब्ली[12] शेरे ह़क़ दुन्या के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे[13] वाह़िद बे रिया के वासिते

बुल फ़रह़[14] का सदक़ा कर ग़म को फ़रह़ दे हुस्नो सा'द
बुल ह़सन[15] और बू सईदे[16] सा'दे ज़ा के वासिते

क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरिय्यों में उठा
क़दरे अ़ब्दुल क़ादिरे[17] कुदरत नुमा के वासिते

[1] اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهُمْ رِزْقًا से दे रिज़्क़े ह़सन
बन्दए रज़्ज़ाक़[18] ताजुल अस्फ़िया के वासिते

नस्र[19] अबी सालेह़ का सदक़ा सालेहो मन्सूर रख
दे ह़याते दीं मुह़िय्ये[20] जां फ़िज़ा के वासिते

مدینہ

[1] या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें अच्छी रोज़ी अ़ता फ़रमाई ।

तूरे इरफ़ानो उ़लुव्वो ह़म्दो हुस्ना व बहा
दे अ़ली[21] मूसा[22] ह़सन[23] अह़मद[24] बहा[25] के वासिते़

बहरे इब्राहीम[26] मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी[27] बादशा के वासिते़

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल
शह ज़िया[28] मौला जमालुल[29] औलिया के वासिते़

दे मुह़म्मद[30] के लिये रोज़ी कर अह़मद[31] के लिये
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह[32] से ह़िस्सा गदा के वासिते़

दीनो दुन्या के मुझे ब-रकात दे ब-रकात[33] से
इश्क़े ह़क़ दे इश्क़ी इश्क़े इन्तिमा[1] के वासिते़

हुब्बे अहले बैत दे आले[34] मुह़म्मद के लिये
कर शहीदे इश्क़े ह़म्ज़ा[35] पेश्वा के वासिते़

مدینہ

[1] या'नी इश्क़ की निस्बत रखने वाले।

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शम्से[36] दीं बदरुल उ़ला के वासिते़

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
ह़ज़रते आले[37] रसूले मुक़्तदा के वासिते़

कर अ़ता अह़मद रज़ाए अह़मदे मुरसल मुझे
मेरे मौला ह़ज़रते अह़मद रज़ा[38] के वासिते़

पुर ज़िया कर मेरा चेहरा ह़श्र में ऐ किब्रिया
शह ज़ियाउद्दीन[39] पीरे बा सफ़ा के वासिते़

اَحْیِنَا فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا سَلَامٌ بِالسَّلَام ①
क़ादिरी अ़ब्दुस्सलामे[40] ख़ुश अदा ② के वासिते़

مدینہ

① या'नी हमें दीन व दुन्या में सलामती अ़ता फ़रमा। ② क़ब्ल अज़ी मत़्बूअ़ श–जरे के शेर के अन्दर "अ़ब्दुस्सलाम अ़ब्दे रज़ा" में चूंकि फ़न्नी ए'तिबार से "मीम" गिर रहा था। लिहाज़ा तरमीम की गई है।

इश्क़े अह़मद में अ़त़ा कर चश्मे तर सोज़े जिगर
या ख़ुदा इल्यास[41] को अह़मद रज़ा के वासित़े

सदक़ा इन आ'यां का दे छ ऐन इ़ज़्ज़, इ़ल्मो अ़मल
अ़फ़्वो इरफ़ां आ़फ़ियत इस बे नवा के वासित़े

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन मशाइख़े किराम की ब-र-कत से इस

बन्दे/बन्दी.....**क़ादिरी र-ज़वी**

वल्दिय्यत.....

साकिन.....

का सीना मदीना बना।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मुअर्रख़ा 14 सि.हि.

(इस मन्ज़ूम श-जरे के अश्आ़र के मा'ना और दीगर दिलचस्प मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किताब **"शर्हे श-ज-रए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या"** (217 सफ़ह़ात) मुता़-लआ़ फ़रमाइये)

ماٰخذومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قراٰنِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	مدارج النبوت	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت	مرقاۃ	دارالفکر بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت
مصنف عبدالرزّاق	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الوظیفۃ الکریمہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
دارمی	دارالکتاب العربی بیروت	حیاتِ اعلیٰ حضرت	مکتبۂ نبویّہ مرکز الاولیاء لاہور
السنن الکبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नाम रिसाला : **श-ज-रए अ़त्तारिय्या**

पहली बार : **25,000**

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना** अह़मदआबाद

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

क्या मुरीद बनने के लिये पीर के हाथ पर हाथ रखना ज़रूरी है ?

फ़रमाने इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **:** ब ज़रीअ़ए क़ासिद या ख़त़, मुरीद हो सकता है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 26, स. 585) "हिदाया" में है : जो हुक्म ख़ित़ाब (या'नी मुख़ात़ब से गुफ़्त-गू) का है वोही हुक्म किताब (या'नी ख़त़) का भी है।(ہدایہ ج۳ص۲۳) मा'लूम हुवा कि मुरीद बनने के लिये सामने ह़ाज़िर हो कर हाथ पर हाथ रख कर बैअ़त होना शर्त़ नहीं और औ़रत तो ना मह़रम पीर के हाथ पर हाथ रख ही नहीं सकती, बहर ह़ाल बैअ़ते ग़ाइबाना भी काफ़ी है, लिहाज़ा फ़ोन पर कॉल कर के या मेसेज भेज कर या इन्टर नेट पर मेल कर के या म-दनी चेनल के ज़रीए बैअ़त करना और बैअ़त होना शरअ़न जाइज़ है।

मक-त-बतुल मदीना®
बा'खते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net